संस्कृत वाङ्मय में धर्म मीमांसा

सम्पादक
डॉ० प्रभात कुमार सिंह

विषयानुक्रमणिका

सम्पादकीय		vi
1.	कथासरित्सागर में धर्म जिज्ञासा डॉ. संजय कुमार	1–16
2.	ऋग्वेदीय आरण्यकों में धर्म मीमांसा डॉ. प्रभात कुमार सिंह	17–29
3.	महाभारत में वर्णित विविध गीताओं में राजधर्म : एक अध्ययन डॉ. डॉली जैन	30–39
4.	नाट्य ग्रंथों में धर्म मीमांसा : मृच्छकटिक प्रकरण के संदर्भ में डॉ. पुष्पा यादव विद्यालंकार	40–56
5.	वाल्मीकीय रामायण में अनुस्यूत धर्म मीमांसा डॉ. सौम्या कृष्ण	57–66
6.	संस्कृत वाङ्मय में मानव–मूल्य एवं धर्म मीमांसा अजय यादव एवं सुनील कुमार विश्वकर्मा	67–74
7.	धर्म का कला एवं कर्त्तव्य पक्ष पर विचार डॉ. रेनू शाही	75–84
8.	संस्कृत कथा साहित्यः जातक कथाओ में धर्म मीमांसा डॉ. श्रीमती अर्चना	85–89
9.	अध्यात्म रामायण में प्रतिपादित धर्म व्यवस्था डॉ. अशोक कुमार वर्मा	90–98
10.	श्रीमद्भगवद्गीता में उपदिष्ट धार्मिक एवं नैतिक मूल्यचिंतन डॉ. तेज प्रकाश	99–111
11.	परमात्मा स्वरूप राम से युक्त समस्त प्राणियों की सेवा–सुरक्षा करना मानव का धर्म डॉ. सिकन्दर लाल	112–122
12.	धर्म के आदि स्रोत–वेद डॉ. ऊदल कुमार	123–129
13.	श्रीकृष्ण के मत में धर्मतत्त्व डॉ. सन्दीप कुमार यादव	130–137

कथासरित्सागर में धर्म जिज्ञासा

डॉ.संजय कुमार
सहायक–आचार्य, संस्कृत विभाग,
डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर (म.प्र.)

सोमदेवकृत कथासरित्सागर का 'वृहत्कथा' के प्राप्त रूपातंरणों में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसकी रचना कश्मीर के राजा अनंतवर्मा की पत्नी सूर्यमती के मनोविनोद के लिए 1063 ई. से 1082 ई. के मध्य की गयी। वस्तुतः वृहत्कथा आधारित बुधस्वामीकृत 'वृहत्कथाश्लोकसंग्रह' संघदासगणिकृत 'वसुदेवहिण्डी' और क्षेमेन्द्रकृत 'वृहत्कथामंजरी' का नाम आता है। जिसमें 'कथासरित्सागर' को वृहत्कथा के अधिक समीप माना जाता है। क्योंकि इसके विषय में लेखक के द्वारा स्वयं लिखा गया है– **वृहत्कथायाः सारस्य सङ्ग्रहं रचनाम्यहम्।**[1] अर्थात् वृहत्कथा के सार का संग्रह करता हूँ। यह बात लेखक बहुत जिम्मेदारी के साथ ग्रन्थ के प्रारम्भ में कहता है। 'कथासरित्सागर' 18 लम्बकों के साथ 124 तरंगों में बटी है। जिसमें श्लोकों की संख्या 21388 है। सामान्य रूप से कथा का नाम सुनते ही हमारा ध्यान अचानक गद्य की ओर चला जाता है लेकिन यह गद्य में नहीं पद्य में गुम्फित है। कथा के सन्दर्भ में हमारी प्राचीन परम्परा गेयात्मक ही रही है। दादी, नानी के द्वारा जो सुमनोहर कथाएं सुनाई जाती हैं वह भी अधिकांशतः गेयता को ही धारण की होती हैं। यह गेयता हमारे हृदय और मन दोनों के लिए प्रिय होती है। जिसका उद्देश्य उचित–अनुचित का निराकरण कर विवेक उत्पन्न करना होता है। यही कार्य वेद, पुराण या